International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 2009/30097 VOL. I * ISSUE—7

शोध पत्र

April, 2010

शिक्षक, अभिभावक तथा बालक की परस्पर अपेक्षाएँ

*रामानन्द शर्मा ** श्रीमती प्रवेश लता

*– **प्रवक्ता ग्रीन मिडोज कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चरखी, तहसील चरखी दादरी, हरियाणा

Referred By—

जीवन में अपेक्षाएँ अपनी अहम भूमिका रखती है। सामान्यतः एक व्यक्ति या वर्ग की दूसरे व्यक्ति या वर्ग से उचित व संभव सहयोग प्राप्ति की इच्छा को अपेक्षा कहते है। अपेक्षा की पूर्ति संतुष्टिदायक होती है। कर्त्तव्य अपेक्षा का पूरक है। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। जैसे हम देखते है कि माता–पिता की बच्चों से यह अपेक्षा कि वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करें, बच्चों का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि उसी तरह माता–पिता से यह अपेक्षा है कि वे बच्चों को समय दें तथा उनकी स्वास्थ्य सुविधाएँ उचित प्रकार से करें यह उनका कर्त्तव्य होता है अर्थात हम यह कह सकते है कि एक की अपेक्षा दूसरे का कर्त्तव्य होता है। बालक से सर्वोत्तम विकास के लिए समाज, स्कूल, अभिभावक, पड़ोस सभी की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इन सबके उचित सहयोग द्वारा ही एक बालक का सर्वोन्तमुखी विकास होता है। इन सभी इकाईयों की आपसी अपेक्षाओं का अध्ययन करना स्वाभाविक है।

उद्देश्य : ➤ बालक, माता–पिता, शिक्षक व समाज की एक दूसरे से अपेक्षाओं की पहचान।➤पाठकगण सभी वर्गो की अपेक्षाओं को समझ सकेंगे और उनमें अंतर कर सकेंगे। ➤ सभी वर्ग अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए संभव प्रयास कर सकेंगे। ➤वे अपेक्षाओं को आधारभूत, सुविधाजनक और अतिरिक्त में विभाजित कर सकेंगे।➤इन्हें एक दूसरे की मनोस्थिति की जानकारी होनी चाहिए।➤उचित व अनुचित अपेक्षाओं में अंतर स्पष्ट हो सकेगा। समाज का भी यह कर्त्तव्य बनता है कि वह प्रत्येक निम्न स्तर के बच्चे जिनकी आयु 6–14 वर्ष है स्कूल में भिजवाये तथा माता–पिता को भी अपने बालकों के लिए सम्भव प्रयास करने चाहिए। बच्चों के उपर ज्यादा अपेक्षाएँ भी नहीं रखनी चाहिए। इससे कई बच्चे आत्महत्या तथा दूसरी सामाजिक कुरीतियों के शिकार हो जाते है।

अपेक्षाओं का वर्गीकरण : अपेक्षाएँ विभन्न स्तर पर अलग–अलग निर्धारित होती है, फिर भी हम अपनी सुविधा अनुसार अपेक्षाए इस प्रकार विभाजित करते हैं –

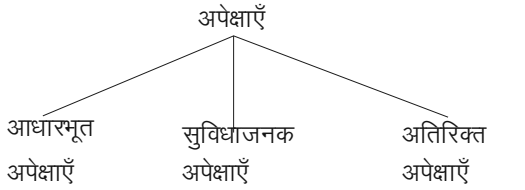

आधारभूत अपेक्षाएँ : इस प्रकार की अपेक्षाओं से हमारा आशय उन से है, जिसमें की मौलिक जरूरतें होती है जैसे बालक के प्रति माता–पिता की अपेक्षाएँ–रोटी, कपड़ा, मकान की सुविधा तथा अच्छे स्कूल में पढ़ाना।

सुविधाजनक अपेक्षाएँ :ये अपेक्षाएँ वे होती है जो कि मौलिक स्तर से ऊपर होती है, जिसमें बच्चों को रेडियो, टी0वी0 आदि की सुविधा देना।

अतिरिक्त अपेक्षाएँ : ये वे अपेक्षाएँ होती है जो कि अत्यंत उच्चतर स्तर की होती है जैसे विधालय में पढ़ने वाले बालको को मोबाईल सुविधा देना। इसके अतिरिक्त अवास्तविक व अनुचित अपेक्षाओं की चर्चा की जाएगी। नीचे दर्शाए गए चित्र के माध्यम से अपेक्षाओं को समझा जा सकता है।

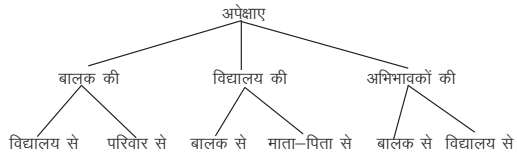

बालक की शिक्षा के मुख्य भागीदार उसका परिवार व विद्यालय है। बालक विद्यालय, माता–पिता की एक दूसरे से अपेक्षाएँ होना न केवल स्वाभाविक है, परन्तु अभिभावकों व शिक्षक की बालक से अपेक्षाएँ बालक को एकाग्रता से पढ़ाई करने के लिए भी प्रेरित करती है। इसी प्रकार बच्चे की शिक्षक से अपेक्षाएँ शिक्षक को अधिक रूप से पढ़ाई की प्रेरणा देती है।

इस प्रकार से इन्हें अलग–अलग वर्गो में वितरित किया जाता है।

बालक की अभिभावकों से अपेक्षाएँ : आधारभूत अपेक्षाएँ➤बालक को पूरे समाज के साथ पढ़ने भेजें।➤आधी छुट्टी में खाने की सामग्री उपलब्ध हो।➤माता–पिता बच्चों को पढ़ने का समय दें।➤बच्चों को काम पर न लेकर जाऐं।➤बच्चे के लिए घर में पढ़ने की उचित जगह हो।➤माता–पिता बच्चें के सामने शिष्ट व्यवहार करें।

सुविधाजनक अपेक्षाएँ ➤पब्लिक स्कूल में पढ़े। बस से जाये।➤उनका जीवन स्तर ऊँचा हो।➤मनोरंजन सुविधाएँ हो जैसे–पढ़ने का कमरा, टी0वी0, रेडियो आदि।➤सामाजिक उत्सवों पर सहपाठियों और रिश्तेदारों के घर जाने दें।➤माता–पिता घुमाने व फिल्म दिखाने ले जाये।➤घर में आराम के साधन हो। जैसे गर्मी में कूलर, ए0सी0, सर्दियों में हीटर आदि।

अतिरिक्त अपेक्षाएँ➤ व्यक्तिगत स्तर पर विद्यालय में जाने के लिए गाड़ी हो।➤मित्रों को देने के लिए कीमती उपहार हो।➤पढ़ने का कमरा आधुनिक साज–सज्जा से सुसज्जित हो।➤मित्रों से बातचीत में अभिभावक हस्तक्षेप न करें।

बालक की शिक्षको से अपेक्षाएँ :

आधारभूत अपेक्षाएँ ➤अध्यापक कक्षा में आएँ और उन्हें पढ़ायें।➤पढ़ाई में कमजोर बच्चों की ओर विशेष ध्यान दें।➤विस्तृत ज्ञान प्रदान करें।➤विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करें।➤आधुनिक तकनीक से पढ़ाऐं।➤कोई बात स्पष्ट न होने पर डांटे नही, कक्षा में अपमान न करें।➤.शिक्षक सामाजिक व नैतिक दृष्टि से उचित व्यवहार करें।

सुविधाजनक अपेक्षाएँ➤बच्चों की व्यक्तिगत समस्याओं को समझें। बालक को विश्वास में लेकर उन्हें गोपनीय रूप से समझाने में सहायता करें।➤बच्चों की रूचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने में उनकी सहायता करें।➤बालको को उम्र के अनुसार होने वाले शारीरिक परिवर्तनों की जानकारी प्रदान करें।➤सामाजिक हित में अपेक्षित संस्कारों का बीजारोपण करें।➤बालक–बालिका के विकास हेतु परिवार व विद्यालय में सहभागिता स्थापित करें।

अतिरिक्त अपेक्षाएँ➤बेकार सामग्री से कलात्मक व उपयोगी वस्तुएँ बनाना सिखायें।➤बीमारी या अन्य किसी परेशानी के कारण अधिक दिन विद्यार्थी को अनुपस्थित होने पर कारण जानने घर जायें।➤आवश्यकता होने पर उनकी आर्थिक सहायता करें।➤उनके घरों में होने वाले कार्यक्रमों में भाग लें।

अभिभावकों की बच्चों से अपेक्षाएँ :

मूलभूत अपेक्षाएँ➤माता–पिता के स्तर के अनुसार अपनी–अपनी आवश्यकताएँ सीमित रखें।➤आत्मनिर्भर बनें, पारिवारिक कर्त्तव्यों को निभाएँ।➤लग्नपूर्वक शिक्षा ग्रहण करें तथा उच्च उपलब्धि प्राप्त करें।➤छोटे भाई बहनों की पढ़ाई में मदद करें।➤परिवार व समाज में उचित आचरण करें।

सुविधाजनक अपेक्षाएँ➤घर के कार्यो में हाथ बटायें।➤पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य सकारात्मक शौक भी हो।➤पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अलावा अच्छा साहित्य पढ़ें।➤विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लें।➤किसी कार्य हेतु बार–बार न कहना पड़े, यदि गलती हो जायें तो खेद प्रकट करें।

अतिरिक्त अपेक्षाएँ➤समाज में माता–पिता का नाम करें।➤पढ़ाई में हमेशा सबसे आगे रहे।➤सभी समस्याओं का जिक्र अपने माता–पिता के सामने करें।➤पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में भी भाग लें।➤माता–पिता के सामने जिद्द न करें।

अभिभावको की शिक्षकों से अपेक्षाएँ

मूलभूत अपेक्षाएँ➤बच्चें के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करें।➤स्कूल फीस ज्यादा न हो तथा हर वर्ष न बढ़ायें।➤कापियों को उचित प्रकार से जाँचे तथा सुधार कार्य का प्रयोग करें।➤हर विषय को अच्छे ढ़ंग से समझायें।➤बच्चों को उचित आचरण की शिक्षा दें।

सुविधाजनक अपेक्षाएँ➤कक्षा के कमजोर बच्चों पर उचित ध्यान दें।➤बच्चों के साथ आदर्श व्यवहार करें।

अतिरिक्त अपेक्षाएँ➤समय–समय पर प्रतियोगिता करवाई जायें।➤उचित प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन दिया जायें।

शिक्षकों की बालकों से अपेक्षाएँ

मूलभूत अपेक्षाएँ➤कक्षा में अनुशासहीनता न करें।➤विद्यालय समय पर आएँ।➤पाठ को ध्यान से पढ़ें।➤वेशभूषा साफ–सुथरी होनी चाहिए, नाखून कटे हुए होने चाहिए।➤कक्षा में भाईचारे की भावना के साथ रहें।

सुविधाजनक अपेक्षाएँ➤गृहकार्य समय पर करें।➤स्कूल की अन्य गतिविधियों – बालसभा, प्रार्थना तथा प्रतियोगिताओं में भाग लें।➤असहाय साथी का मजाक न करें।➤सोचने का ढ़ंग वैचारिक व तर्कपूर्ण हो।➤बिना सोचे समझे काम न करें।➤अपने स्कूल के सभी छात्र–छात्राओं के साथ उचित व्यवहार करें।➤बोलने, उठने–बैठने का शिष्टाचार निभाएँ।➤कक्षा में शिक्षक के न होने पर शांत रहें।➤कक्षा में गन्दगी न करें।

अतिरिक्त अपेक्षाएँ➤शिक्षकों की हर बात मानें।➤सदैव अनुशासित रहें।➤गलती न करें।➤बालक एक ही बार में पाठ समझ जाएँ।

शिक्षकों की अभिभावकों से अपेक्षाएँ

मूलभूत अपेक्षाएँ ➤शैक्षिक कार्यो में सकारात्मक भूमिका निभाएँ।➤बच्चों से बातचीत करें, उनके अच्छे कार्यो की प्रशंसा करें, उनकी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनें और निदान करें। ➤ बच्चों को गृहकार्य करवायें, उनकी कठिनाइयाँ दूर करें।➤बच्चों का स्कूल बैग जांचे तथा उनकी प्रगति पर ध्यान दें।

सुविधाजनक अपेक्षाएँ ➤ स्कूल की सज्जा के लिए सामग्री तैयार करके दें।➤यदि माता–पिता किसी क्षेत्र में विद्वान है तो स्कूल में अध्यापकों व छात्रों को समय दें।

अतिरिक्त अपेक्षाएँ ➤ स्कूल के संसाधनों की कमी को पूरा करें।➤स्कूल के कार्यक्रमों में भाग लें।➤अध्यापकों की समस्याओं का समाधान करें।➤स्कूल की समस्या पर सकारात्मक दृष्टिकोण हो। उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि अध्यापक, छात्र, माता–पिता एक दूसरे के पूरक है और एक दूसरे की अपेक्षाएँ एक दूसरे पर ही आधारित है। इसलिए इन तीनों पक्षों को अपनी–अपनी अपेक्षाओं की तरफ उचित दृष्टिकोण रखना चाहिए। अभिभावकों तथा अध्यापकों को बच्चों के ऊपर ज्यादा दबाव नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे बच्चे ढ़ीठ बन जाते है तथा विकास पूर्णतया नही हो पाता। अध्यापकों को भी छात्रों को सही शिक्षा देनी चाहिए ताकि वे भविष्य में सफलता को प्राप्त कर सकें। माता–पिता का कर्त्तव्य और भी अधिक बनता है कि वे अध्यापकों से तथा बच्चों से सही तालमेल बनाकर चलें क्योंकि बच्चे माता–पिता का अनुकरण करते हैं। घर में बालकों को उचित वातावरण दिया जाना चाहिए।

RESEARCH ANALYSIS AND EVALUATION

''अध्यापक प्रश्नावली''

इस प्रश्नावली से ज्ञात होगा कि बालकों को माता–पिता तथा स्कूल से क्या–क्या अपेक्षाएँ है।

1. क्या आप चाहते है कि आपके माता–पिता आपको हर सुविधाएँ प्रदान करें?
   (क) जी हाँ (ख) जी नहीं
2. क्या आप चाहते है कि आपके अभिभावक आपका जन्मदिन अच्छे ढ़ंग से मनाएँ चाहे उनकी आर्थिक स्थिति कैसी भी हो।
   (क) जी हाँ (ख) जी नहीं
3. क्या आप चाहते है कि आपके अभिभावक आपको शहर के सबसे महंगे स्कूल में पढ़ाएँ।
   (क) जी हाँ (ख) जी नहीं
4. आप अपने माता–पिता का व्यवहार अपने बहन–भाईयों के प्रति मानते है कि –
   (क) वे उन्हें ज्यादा प्रेम करते है।
   (ख) वे भाईयों को ज्यादा प्रेम करते हैं
   (ग) आप इस बारे में सोचते ही नहीं।
5. क्या आप चाहते है कि हर महीने आपको जेब खर्च 1500 रू0 दिया जायें?
   (क) नहीं आवश्यकतानुसार होनी चाहिए।
   (ख) हर महीने समान मात्रा में जेब खर्च दिया जायें।
   (ग) एक निश्चित राशि तो दी ही जाये, जरूरत पर यह राशि बढ़ा दी जायें।
6. आपकी माताजी भी नौकरी करती है, तब आप चाहते है कि –
   (क) आपकी माताजी आपका स्कूल बैग आदि की व्यवस्था करें।
   (ख) आप उनके साथ मिलकर कार्य करेंगे।
   (ग) आप सारा कार्य खुद करेंगे।
7. आपके माता–पिता नौकरी करते हैं, विद्यालय में कार्यक्रम है तब चाहेंगे –
   (क) माता–पिता दोनों छुट्टी करें तथा कार्यक्रम देखें।
   (ख) केवल दोनों में से केवल एक आ जाए।
   (ग) परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करें।
   (घ) केवल माताजी ही आयें।
8. स्कूल में किसी कार्य हेतु चन्दा इक्ट्ठा किया जा रहा है – आप चाहेंगे –
   (क) आपके अभिभावक सबसे अधिक चन्दा दें।
   (ख) अपनी सामर्थ्य अनुसार चन्दा दें।
   (ग) कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के माता–पिता ने जितना दिया है।
9. आपके बड़े भाई–बहन हैं। आप चाहेंगे कि –
   (क) वह आपको प्रतिदिन पढ़ाएँ।
   (ख) बिल्कुल भी न टोंके।
   (ग) स्कूल कार्य ही पूरा करवाएँ।
10. घूमने–फिरने सम्बन्ध में आप चाहते है कि –
    (क) आपके माता–पिता आपको पार्क लेकर जायें।
    (ख) किसी दर्शनीय स्थल पर हर महीने लेकर जायें
    (ग) आप जाने के लिए जिद्द करोगे।
    (घ) अभिभावकों की इच्छा पर छोड़ देंगे।
11. आपके साथी को आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। इसके लिए आप –
    (क) माता–पिता से चोरी करके अपने साथी की सहायता करेंगे।
    (ख) अभिभावक से सहायता के लिए कहेंगे।
    (ग) अपनी बचाई गई जेब खर्च की राशि से सहायता करेंगे।
12. आप गृह कार्य करोगे तब चाहोगे कि –
    (क) आपकी माताजी आपका सारा गृह कार्य कर दें।

(ख) आप उनके पास बैठकर काम करोगे।
(ग) उनसे दूर रहकर कार्य करना चाहोगे।

13. आप लड़की है तथा आपकी माताजी आप से कार्य करवाना चाहती है –
(क) आप यह कहेंगे कि भाई से भी कार्य करवाया जायें।
(ख) चुपचाप कार्य कर देंगी।
(ग) पढ़ाई के बाद के समय में कार्य के बारे में सोचेगी।

14. आपकी छोटी बहन आपके साथ विद्यालय में जाती है तब आप चाहेंगे कि –
(क) वह आपको पानी दें।
(ख) वह पहले आपका कार्य करें तथा बाद में स्वयं का।
(ग) आप अपना काम स्वयं करोगे।

15. आप अपनी मांग मनवाने के लिए करोगे कि –
(क) स्कूल नही जाओगे।
(ख) सभी प्रकार की जिद्द करोगे।
(ग) अपनी मांग के समर्थन में अच्छी तरह समझाओगे।

इस प्रश्नावली से ज्ञात होगा कि अभिभावकों की बालक व विद्यालय से अपेक्षाएँ किस प्रकार है –

1. आपका बच्चा पढ़ने में कमजोर है –
(क) आप उसकी सहायता स्वयं करेंगे।
(ख) अध्यापक से उसकी शिकायत करेंगे तथा उनसे लड़ाई करेंगे।
(ग) ट्यूशन आदि की व्यवस्था करेंगे।

2. आपका बच्चा कक्षा में प्रथम नही आता इसके लिए –
(क) आप बच्चे पर डाँट लगाओगे।
(ख) अध्यापक के जाकर झगड़ा करोगे।
(ग) अगले वर्ष मेहनत के लिए प्रोत्साहित करोगे।

3. आप चाहते है कि –
(क) आपका बच्चा हर बार प्रथम आयें।
(ख) बस पास होते रहे।
(ग) अच्छे अंक प्राप्त करे।

4. आप स्कूल के अन्य कार्यक्रमों के लिए छात्र से कहेंगे –
(क) वह समय बर्बाद न करें।
(ख) वह बढ़–चढ़कर भाग लें।
(ग) कुछ भी नही कहेंगें।
(घ) उसे प्रोत्साहित करेंगे।

5. आप बच्चे को पढ़ना चाहते है ताकि –
(क) वह बड़ा आदमी बने।
(ख) वह सरकारी नौकरी प्राप्त कर सके।
(ग) वह सर्वांगीण विकास कर सके।

6. आप चाहते है कि –
(क) आपका बच्चा सिर्फ पढ़ता ही रहे।
(ख) आपका बच्चा खेल में रूचि रखे।
(ग) पढ़ाई के साथ–साथ अन्य कार्यक्रमों में भी रूचि लें।

7. आप बच्चा पढ़ रहा है क्या आप उसे –
(क) छोटे–छोटे कार्यो के लिए पुकारेगें।
(ख) जरूरी कार्य हेतु ही पुकारेगें।
(ग) बिल्कुल नही पुकारेगें।

8. आपका बच्चा पाठ्यक्रम के अलावा पुस्तकें पढ़ता है –
(क) आप उसे डाटेंगे।
(ख) उसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
(ग) शिक्षक से शिकायत करेंगें।

9. आपके बच्चे का झगड़ा उसके साथी से हो जाता है तब आप –
(क) शिक्षक से झगड़ा करोगे।
(ख) दूसरे बच्चे की पिटाई करोगे।
(ग) दोनों बच्चों को साथ बैठकर समझाओगे।
(घ) सिर्फ अपने बच्चें की कमी निकालोगे।

10. आप चाहते है कि आपका बच्चा घर में –
(क) सबके साथ मिलकर रहें।
(ख) सिर्फ माता–पिता के साथ।
(ग) अन्य बच्चों से औपचारिक ढ़ंग से ही रहें।